पेन्टाटयूक

अध्याय 6

अब्राहम का जीवन : संरचना और विषय-वस्तु

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय....1
साहित्यिक रूपरेखा....2
उत्पत्ति की पुस्तक....2
अब्राहम....3
मूल इकाइयाँ....3
क्रम-व्यवस्था....4
मुख्य विषय....6
मुख्य अनुच्छेद....6
परिचय....7
भाग एक....7
भाग दो....8
प्रकट होना....9
ईश्वरीय अनुग्रह....9
अब्राहम की विश्वासयोग्यता....10
अब्राहम के लिए आशीषें....11
अब्राहम के द्वारा आशीषें....12
उपसंहार....13

पेन्टाटयूक

अध्याय छः

अब्राहम का जीवन : संरचना और विषय-वस्तु

परिचय

हम सब जानते हैं कि पृथ्वी के देशों के बीच बहुत सी भिन्नताएँ पाई जाती हैं। उन सब का अपना भूगोल, विशिष्ट जातीय समूह होता है और अपनी अलग-अलग परंपराएँ होती हैं। परंतु अधिकांश देशों में कम से कम एक बात समान होती है : हम सब के पास इस विषय में कहानियाँ हैं कि हमारे देश की शुरूआत कैसे हुई। इसलिए हममें से बहुत से लोग उन लोगों के बलिदानों एवं उपलब्धियों के बारे में सुनना पसंद करते हैं जिन्होंने हमारे देशों की नींव रखी थी। हम उनकी वीरता की बढ़ाई में गीतों को गाते हैं।

हम शुरूआत की इन कहानियों को इतना अधिक क्यों पसंद करते हैं और दूसरों को भी क्यों बताते हैं? यह बात लगभग प्रत्येक मानवीय संस्कृति का इतना महत्वपूर्ण भाग क्यों है?

इसके कम से कम दो कारण हैं। एक ओर, हम अतीत की यादों को आगे बढ़ाने के लिए अपने देशों की उत्पत्ति के बारे में बात करते हैं। हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे अपनी जड़ों को याद रखें, कि वे कहाँ से आए हैं। परंतु दूसरी ओर, हम उन आदर्शों को भी याद रखना चाहते हैं जिन्होंने अतीत में हमारे देशों का मार्गदर्शन किया था ताकि हमें भविष्य के लिए दिशा मिल सके।

ऐसी ही कुछ बात पुराने नियम में भी परमेश्वर के लोगों पर लागू होती है। प्राचीन इस्राएलियों ने अपने आरंभ के विषय में कहानियों का आनंद लिया और उन्हीं दो कारणों से उन्हें एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाया। उन्होंने बहुत पहले की घटनाओं को याद करने के लिए अपने पूर्वजों के दिनों के बारे में बताया ताकि अतीत की महान उपलब्धियों को भुलाया न जा सके। परंतु उन्होंने स्वयं को उस दिशा के बारे में याद दिलाने के लिए भी इन कहानियों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे पहुँचाया जिसमें उनको भविष्य में आगे जाना था।

यह *पिता अब्राहम* नामक हमारी श्रृंखला का पहला अध्याय है। इस श्रृंखला में हम उन कहानियों की खोज करेंगे जिन्हें प्राचीन इस्राएलियों ने अपने महान कुलपिता, अब्राहम के बारे में बताई हैं। और हम देखेंगे कि मूसा ने इन कहानियों को उत्पत्ति की पुस्तक में लिखा ताकि उसके समय के इस्राएली अतीत को याद रखें, और इस प्रकार उस भविष्य को भी स्पष्टता से समझ लें जो परमेश्वर ने उनके लिए रखा था।

यह इस श्रृंखला के तीन अध्यायों में से पहला अध्याय है, और हमने इसका शीर्षक दिया है, "अब्राहम का जीवन : संरचना और विषय-वस्तु।" इस अध्याय में हम उत्पत्ति के उन अध्यायों की संरचना और विषय-वस्तु पर ध्यान केंद्रित करते हुए अब्राहम के जीवन का अपना अवलोकन शुरू करेंगे, जो उसके बारे में बताते हैं। मूसा ने अब्राहम के जीवन के अपने विवरण की संरचना कैसे की? इन अध्यायों की मुख्य बातें कौनसी थीं?

हम अब्राहम के जीवन की संरचना एवं विषय-वस्तु की खोज दो भागों में करेंगे : पहला, हम इस विवरण की साहित्यिक रूपरेखा को देखेंगे। और दूसरा, हम इन अध्यायों के प्रमुख विषयों की खोज करेंगे। आइए पहले हम अब्राहम के जीवन की साहित्यिक रूपरेखा को देखें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

साहित्यिक रूपरेखा

जब कभी हम पवित्रशास्त्र के अब्राहम के जीवन जैसे भागों पर आते हैं जिनमें मुख्य रूप से विवरण या कहानियाँ होती हैं, तो हमें याद रखना चाहिए कि बाइबल के लेखकों ने बहुत पहले घटी घटनाओं से बढ़कर काफी कुछ बताया है। क्योंकि पवित्र आत्मा ने उन्हें परमेश्वर का वक्ता होने के लिए प्रेरित किया था, इसलिए जो इतिहास उन्होंने लिखा वह पूरी तरह से सच्चा था। परंतु पवित्र आत्मा ने उन्हें उन लोगों की आवश्यकताओं को संबोधित करने के लिए प्रेरित किया जिनके लिए उन्होंने लिखा था, अतः बाइबल के लेखकों ने अपने पाठकों को ध्यान में रखते हुए भी इतिहास के बारे में लिखा था। उन्होंने अपनी कहानियों की रूपरेखा ऐसे तैयार की जिससे ये कहानियाँ उन लोगों के जीवनों के लिए प्रासंगिक बनें जो उन्हें प्राप्त करेंगे।

जब हम उत्पत्ति की पुस्तक में अब्राहम के जीवन के विवरण की ओर बढ़ते हैं, तो हम आश्वस्त हो सकते हैं कि ये कहानियाँ उन घटनाओं का गलत प्रस्तुतिकरण नहीं करतीं जो वास्तव में अब्राहम के जीवन में घटी थीं। परंतु इस बात को समझने के लिए कि मूसा के मूल पाठकों के जीवनों में ये कहानियाँ कैसे लागू हुईं, हमें इस बात से भी अवगत होना चाहिए कि उत्पत्ति की पुस्तक अब्राहम के जीवन को *कैसे* दर्शाती है। अब्राहम के प्रस्तुतिकरण को समझना शुरू करने का एक मुख्य तरीका उत्पत्ति में अब्राहम के जीवन की साहित्यिक शैली को खोजना है।

हम अब्राहम के जीवन की साहित्यिक शैली की खोज दो चरणों में करेंगे। पहला, हम उत्पत्ति की संपूर्ण पुस्तक का एक अवलोकन प्रस्तुत करेंगे, और हम देखेंगे कि अब्राहम की कहानी उत्पत्ति की बड़ी तस्वीर में कैसे उपयुक्त बैठती है। और दूसरा, हम उन कहानियों की संरचना पर ध्यान देंगे जो अब्राहम के जीवन पर ध्यान केंद्रित करती हैं। आइए उत्पत्ति की संपूर्ण पुस्तक के अवलोकन के साथ आरंभ करें।

उत्पत्ति की पुस्तक

सदियों से, विभिन्न व्याख्याकारों ने उत्पत्ति की पुस्तक की व्यापक संरचना को भिन्न-भिन्न तरीकों से समझा है। एक दृष्टिकोण उत्पत्ति की पुस्तक में बिखरे हुए तथाकथित “वंशावलियों” या "टोलेडॉट" के अनुच्छेदों की पुनरावृत्ति के आधार पर उत्पत्ति को दस खंडों में विभाजित करने का रहा है। और हमें स्वीकार करना चाहिए कि इस व्यापक स्तर के दृष्टिकोण में कुछ महत्व अवश्य है। परंतु हमने अन्य श्रृंखलाओं में सुझाव दिया है कि उत्पत्ति की पुस्तक को तीन बड़े भागों में देखना अधिक सहायक होगा : उत्पत्ति 1:1-11:9 में अति-प्राचीन इतिहास; 11:10-37:1 में आरंभिक कुलपिताओं का इतिहास; और 37:2-50:26 में बाद के कुलपिताओं का इतिहास।

उत्पत्ति 1:1-11:9 का अति-प्राचीन इतिहास संसार के उद्गमों के बारे में परमेश्वर के प्रकाशित सत्य को प्रस्तुत करता है। यह सृष्टि की रचना, सृष्टि की भ्रष्टता, और विश्वव्यापी जलप्रलय के द्वारा सृष्टि को फिर से आकार देने के बारे में बताता है। और यह साहित्यिक इकाई को ऐसे एक साथ बांधे रखता कि यह प्राचीन मध्य-पूर्वी इतिहासों के प्रारूपों के समान दिखाई देता है।

उत्पत्ति 37:2-50:26 में बाद के कुलपिताओं का इतिहास यूसुफ की कहानी को बताता है। यह यूसुफ और उसके भाइयों के बीच संघर्ष के साथ आरंभ होती है, और फिर मिस्र में यूसुफ द्वारा अधिकार को प्राप्त करने, और अंत में अपने भाइयों के साथ यूसुफ के मेल-मिलाप की ओर बढ़ती है। कई व्याख्याकारों ने इस बड़ी, एकीकृत कहानी का वर्णन यूसुफ के बारे में एक उपन्यास के रूप में किया है।

इन पहले और अंतिम भागों के बीच में उत्पत्ति 11:10-37:1 है। इन अध्यायों में कुलपिताओं का आरंभिक इतिहास, अर्थात् इस्राएल राष्ट्र के पहले पूर्वजों के बारे में कहानियों का संग्रह शामिल है। इस श्रृंखला में हमारी रूचि उत्पत्ति के बीच के खंड के एक भाग में है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

सामान्य शब्दों में, कुलपिताओं का आरंभिक इतिहास दो भागों में विभाजित है : 11:10-25:18 में अब्राहम का जीवन और 25:19-37:1 में याकूब का जीवन। अब पहले पहल यह द्विभागी विभाजन चकित करनेवाला हो सकता है क्योंकि पवित्रशास्त्र में हम अक्सर *तीन* प्राचीन कुलपिताओं के उल्लेख को सुनते हैं : अब्राहम, इसहाक और याकूब। इसलिए, हमने उम्मीद की होगी कि इन अध्यायों की साहित्यिक संरचना भी तीन भागों में होगी, जो पहले हमें अब्राहम के बारे में, फिर इसहाक के बारे में और फिर याकूब के बारे में बताएगी। परंतु वास्तव में, कुलपिताओं के आरंभिक इतिहास का कोई भी भाग इसहाक को एक प्रमुख व्यक्ति दर्शाते हुए उसे समर्पित नहीं है। इसकी अपेक्षा वह केवल एक परिवर्ती चरित्र के रूप में कार्य करता है। उसके जीवन को पहले अब्राहम के जीवन के एक भाग के रूप में, और फिर याकूब के जीवन के एक भाग के रूप में दर्शाया गया है। और परिणामस्वरूप, कुलपिताओं का आरंभिक इतिहास वास्तव में केवल दो प्रमुख भागों में विभाजित होता है : अब्राहम का जीवन और फिर याकूब का जीवन। इस श्रृंखला में हमारी रूचि कुलपिताओं की अवधि के पहले भाग, अर्थात् पिता अब्राहम के विषय में मूसा के विवरण पर है। आइए अब्राहम के जीवन की संरचना पर निकटता से ध्यान दें, जैसा कि यह उत्पत्ति 11:10-25:18 में प्रस्तुत किया गया है।

अब्राहम

अब क्योंकि हम देख चुके हैं कि उत्पत्ति की व्यापक संरचना में अब्राहम का जीवन कहाँ उपयुक्त बैठता है, इसलिए हमें अपने अगले विषय की ओर मुड़ना चाहिए : उत्पत्ति 11:10-25:18 में अब्राहम के जीवन की संरचना। अब्राहम के जीवन की संरचना की खोज करने के लिए हम इन अध्यायों को दो स्तरों पर देखेंगे : एक ओर, हम अब्राहम के जीवन की *मूल इकाइयों* या घटनाओं को ढूँढेंगे, और दूसरी ओर, हम जाँचेंगे कि उत्पत्ति की पुस्तक में पाए जानेवाले अब्राहम के चरित्र में ये विभिन्न घटनाएँ कैसे व्यवस्थित की गई हैं। आइए पहले अब्राहम के जीवन की मूल इकाइयों या घटनाओं को ढूँढें।

मूल इकाइयाँ

मूसा ने सत्रह मूल इकाइयों या घटनाओं में अब्राहम के जीवन के बारे में लिखा है :

1. पहली, अब्राहम की अनुगृहित वंशावली (11:10-26 में), ऐसी वंशावली जो अब्राहम के परिवार की विरासत का वर्णन करती है।
2. इस अनुच्छेद के बाद अब्राहम के असफल पिता का विवरण है (11:27-32 में), एक दूसरी वंशावली जो अपने पिता तेरह के साथ अब्राहम की यात्राओं का वर्णन करती है।
3. अब्राहम का कनान देश को जाना (12:1-9 में), अब्राहम की आरंभिक बुलाहट और प्रतिज्ञा के देश की ओर यात्रा की कहानी।
4. मिस्र से अब्राहम का छुटकारा (12:10-20 में), वह समय जब अब्राहम मिस्र को गया और परमेश्वर ने उसे छुड़ाया।
5. लूत के साथ अब्राहम का टकराव (13:1-18 में), अब्राहम के दासों और लूत के दासों के बीच झगड़े की कहानी।
6. अब्राहम द्वारा लूत को छुड़ाना (14:1-24 में), वह समय जब अब्राहम लूत को उन राजाओं से छुड़ाने के लिए युद्ध करने गया जिन्होंने उसे बंदी बना लिया था।
7. अब्राहम की वाचाई प्रतिज्ञाएँ (15:1-21 में), अब्राहम को आश्वस्त करते हुए परमेश्वर की वाचा का विवरण कि उसका वंश बहुत बड़ा होगा और एक स्थाई देश होगा।
8. हाजिरा के साथ अब्राहम की असफलता (16:1-16 में), वह समय जब सारा की दासी, हाजिरा के साथ अब्राहम की एक संतान उत्पन्न होती है, अर्थात् इश्माएल।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

9. अब्राहम की वाचाई मांगें (17:1-27 में), परमेश्वर की वाचा का विवरण जिसने अब्राहम को परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति विश्वासयोग्यता की आवश्यकता की याद दिलाई।
10. सदोम और अमोरा (18:1-19:38 में), सदोम और अमोरा के विनाश और उस विनाश से लूत के बचाए जाने की कहानी।
11. अबीमेलेक के लिए अब्राहम की प्रार्थना (20:1-18 में), वह समय जब अब्राहम ने पलिश्ती अबीमेलेक के लिए प्रार्थना की।
12. अब्राहम के पुत्र इसहाक और इश्माएल (21:1-21 में), इसहाक के जन्म और अब्राहम के परिवार से इश्माएल के निकाले जाने की कहानी।
13. अबीमेलेक के साथ अब्राहम की संधि (21:22-34 में), वह समय जब अब्राहम ने भूमि और पानी के अधिकारों के संबंध में अबीमेलेक के साथ समझौता किया।
14. अब्राहम की परीक्षा (22:1-24 में), एक जानी-पहचानी घटना जिसमें परमेश्वर ने अब्राहम से उसके पुत्र इसहाक को बलि चढ़ाने के लिए कहा।
15. अब्राहम की कब्र की संपत्ति (23:1-20 में), सारा की मृत्यु और कब्र के स्थान को खरीदना।
16. अब्राहम के पुत्र इसहाक के लिए पत्नी (24:1-67 में), वह समय जब रिबका इसहाक की पत्नी बनी।
17. और अंततः, अब्राहम की मृत्यु और उसका उत्तराधिकारी (25:1-18 में), अब्राहम की मृत्यु की समाप्ति की कहानी और उसके वंश का विवरण।

जैसा कि हम देख सकते है, अब्राहम के जीवन की कहानी उन घटनाओं के मूलभूत क्रम में पाई जाती जैसे-जैसे वे घटनाओं उसके जीवन में घटित होती हैं। कहानियों का आरंभ तभी होता है जब वह काफी जवान था और अपने पिता के अधिकार के अधीन था, और वे अब्राहम के बुजुर्ग होने और उसकी मृत्यु के साथ समाप्त होती हैं। कई बार, अब्राहम के जीवन की विभिन्न घटनाओं के बीच कई संकेत और अप्रत्यक्ष संबंध पाए जाते हैं। परंतु पुराने नियम के अन्य भागों के साथ तुलना करने पर अब्राहम के जीवन की कहानी में सत्रह स्वतंत्र घटनाओं की एक श्रृंखला पाई जाती है। इनमें से प्रत्येक घटना की रूपरेखा का उद्देश्य अब्राहम के जीवन की घटनाओं का वर्णन करना और मूसा के मूल इस्राएली श्रोताओं को कुछ बातें सिखाना था। जब मूसा उन्हें मिस्र से प्रतिज्ञा के देश की ओर लेकर जा रहा था, तो इनमें से प्रत्येक घटना में उन्हें देने के लिए बहुत कुछ था, ठीक वैसे ही जैसे इसके पास आज हमारे जीवनों में देने के लिए बहुत कुछ है।

अब्राहम के जीवन की मूलभूत घटनाओं का परिचय देने के बाद, अब हम यह खोजने के लिए तैयार है कि ये इकाइयाँ आपस में कैसे जुड़ी रहती हैं। अब्राहम की कहानी एकीकृत कैसे है? कौन सा तर्क उन्हें संगठित रखता है? सरल शब्दों में, अब्राहम के जीवन की घटनाएँ विशिष्ट विषयों के चारों ओर एक समूह में घूमती हैं, और ये समूह पाँच सममित या संतुलित चरणों की रचना करते हैं।

क्रम-व्यवस्था

पहला, जैसे कि हम कुलपिता के जीवन के आरंभ में यह अपेक्षा कर सकते हैं, मूसा का विवरण अब्राहम की पृष्ठभूमि और परमेश्वर के साथ उसके आरंभिक अनुभवों के साथ शुरू होता है। इस भाग में शामिल ये बातें सम्मिलित है : अब्राहम का अनुगृहित वंश, उसका असफल पिता, और उसका कनान देश को जाना। उसके परिवार की पृष्ठभूमि तथा प्रतिज्ञा के देश में उसके आरंभिक प्रवास पर ध्यान देने के द्वारा ये अध्याय कैसे स्पष्ट करते हैं कि अब्राहम ने परमेश्वर के साथ अपने विशेष संबंध में प्रवेश किया।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अब्राहम के जीवन की घटनाओं का दूसरा समूह 12:10 से लेकर 14:24 तक दूसरे लोगों के साथ अब्राहम के शुरुआती संपर्कों पर ध्यान केंद्रित करता है। इसमें मिस्र से उसका छुटकारा, लूत के साथ संघर्ष, और उसके द्वारा लूत को बचाना सम्मिलित है। ये तीन घटनाएँ एक साथ इसलिए जुड़ी हुई हैं क्योंकि ये मुख्य रूप से लोगों के कई समूहों के प्रतिनिधियों के साथ अब्राहम की भेंटों और परस्पर संबंधों पर ध्यान केंद्रित करती हैं। इन अध्यायों में कुलपिता ने मुख्यतः मिस्र के फिरौन, अपने भतीजे लूत, आक्रमण करनेवाले राजाओं, सदोम के राजा और सलेम के राजा मलिकिसिदक के साथ व्यवहार किया।

अब्राहम के जीवन का तीसरा और मध्य का भाग 15:1-17:27 में परमेश्वर के साथ अब्राहम के वाचाई सबंध पर ध्यान केंद्रित करता है। कुलपिता के जीवन के इस भाग में तीन घटनाएँ शामिल हैं : अब्राहम की वाचाई प्रतिज्ञाएँ, हाजिरा के साथ अब्राहम की असफलता, और अब्राहम की वाचाई मांगें।

चौथा भाग, जो 18:1-21:34 में पाया जाता है, दूसरे लोगों के साथ अब्राहम के बाद के संपर्कों की ओर मुड़ता है। ये अध्याय मुख्यतः इसलिए एक साथ जुड़े हैं क्योंकि ये लोगों के अन्य समूहों के साथ अब्राहम के संबंधों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। ये अध्याय सदोम और अमोरा के संबंध में अब्राहम का वर्णन करते हैं। हम अबीमेलेक के लिए अब्राहम की मध्यस्थता, इसहाक और इश्माएल के साथ अब्राहम के संबंध, और अबीमेलेक के साथ अब्राहम की संधि को देखते हैं। ये चारों घटनाएँ और अधिक स्पष्ट करती हैं कि कैसे कुलपिता ने लूत और उसके परिवार के साथ व्यवहार किया, और साथ में यह कि सदोम और अमोरा के लोगों तथा पलिश्ती अबीमेलेक के साथ उसका क्या संबंध था।

जैसे कि हम अपेक्षा कर सकते हैं, 22:1-25:18 में पाया जानेवाला कुलपिता का पाँचवां एवं अंतिम खंड अब्राहम के जीवन के अंत की बातों को दर्शाता है, विशेषकर उसके वंश और उसकी मृत्यु के साथ। इसमें वर्णन है कि कैसे परमेश्वर ने अब्राहम की परीक्षा ली। यह अब्राहम के द्वारा गाड़े जानेवाली भूमि को खरीदने का वर्णन करता है। यह दर्शाता है कि अब्राहम ने कैसे अपने पुत्र इसहाक के लिए पत्नी ढूँढी। और यह अब्राहम की मृत्यु को भी दर्शाता है। ये अध्याय अब्राहम की पत्नी सारा और उसके पुत्र इसहाक (अब्राहम के सच्चे उत्तराधिकारी) पर ध्यान केंद्रित करते हैं, और उन्हें अब्राहम की दूसरी पत्नियों और पुत्रों से अधिक सम्मान देते हैं।

क्योंकि अब्राहम के जीवन की घटनाएँ अपेक्षाकृत एक दूसरे से स्वतंत्र हैं, इसलिए जब लोग अब्राहम के बारे में पहली बार पढ़ते हैं, तो अक्सर वे एक घटना से दूसरी घटना तक बिना किसी लक्ष्य के भटकते रहते हैं। वे अब्राहम की कहानियों को ऐसे पढ़ते हैं जैसे कि मूसा ने इस घटना या उस घटना का उल्लेख बिना किसी पूर्वाभास या योजना के किया हो। परंतु इस आरंभिक प्रभाव के बावजूद, अब्राहम के जीवन की कहानियों को वास्तव में घटनाओं के खंडों या समूहों में व्यवस्थित किया गया है जिनके प्रमुख विषय समान हैं। हमारी पाँच चरणों की सरल रूपरेखा प्रकट करती है कि मूसा ने वास्तव में इसकी योजना बनाई थी कि वह अब्राहम के बारे में क्या कहने जा रहा था। एक बड़े पैमाने पर अब्राहम के जीवन का विवरण एक संतुलित नाटक का आकार लेता है। नाटक का प्रत्येक भाग अनुरूप भाग के साथ संतुलन बनाता है।

11:10-12:9 में हम अब्राहम की पारिवारिक पृष्ठभूमि और परमेश्वर के साथ उसके आरंभिक अनुभवों पर केंद्रित ध्यान को देखते हैं। इन आरंभिक विषयों के विपरीत, 22:1-25:18 में पाए जानेवाले समाप्ति के विवरण अब्राहम के अंतिम वर्षों तथा उसकी संतानों पर ध्यान देते हैं।

यही नहीं, अब्राहम के जीवन के दूसरे भाग में ऐसी घटनाएँ पाई जाती हैं जो अन्य जातियों और राष्ट्रों के लोगों के साथ अब्राहम के व्यवहार को दर्शाते हैं। और वृत्ताकार समरूपता, अर्थात् दूसरे भाग में देखे गए समान विषयों की ओर लौटने के द्वारा, अब्राहम के जीवन का चौथा भाग अन्य लोगों के साथ अब्राहम की भेंटों के और अधिक उदाहरणों पर ध्यान देने की ओर लौटता है।

अंततः, अब्राहम के जीवन के मध्य में ऐसे तीन निर्णायक अध्याय हैं जो विशेष रूप से परमेश्वर के साथ अब्राहम की वाचा पर ध्यान देते हैं। ये अध्याय अब्राहम के जीवन के निर्णायक बिंदु की रचना करते

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

हैं और उन वाचाई संबंधों के मूलभूत प्रभावों को स्पष्ट करते हैं जो अब्राहम और उसके वंशों का परमेश्वर के साथ था।

इन अध्यायों की रचना प्रकट करती है कि मूसा ने अपने विवरण की रचना बड़ी सावधानी के साथ की थी। उसने इस्राएल के पहले कुलपिता के साहित्यिक चित्र की रचना की ताकि वह उसके जीवन के प्रमुख पहलुओं पर ध्यान आकर्षित कर सके : आशीष और उसके अधिकारपूर्ण उत्तराधिकार के लिए अब्राहम के चुनाव, अब्राहम के पहले और बाद के व्यवहारों, और परमेश्वर के साथ अब्राहम का वाचाई संबंध। और जैसा कि हम देखने जा रहे हैं, इस साहित्यिक केंद्र की रचना उन इस्राएलियों की आवश्यकताओं को संबोधित करने के लिए की गई थी जिनके लिए मूसा ने सबसे पहले इन कहानियों को लिखा था। जब मूसा उन्हें प्रतिज्ञा के देश की ओर ले जा रहा था तो अब्राहम के जीवन ने इस्राएलियों को सिखाया कि कैसे उन्हें अब्राहम का अनुसरण करना है। और जब हम उत्पत्ति के इस भाग पर पहुँचते हैं, तो हम इस उद्देश्यपूर्ण रूपरेखा के महत्व को बार-बार देखेंगे।

अब्राहम के जीवन की व्यापक साहित्यिक रूपरेखा को देख लेने के बाद हमें अब्राहम के जीवन की संरचना और विषय-वस्तु के अपने अध्याय के दूसरे विषय की ओर मुड़ना चाहिए : उत्पत्ति 11:10-25:18 के मुख्य विषय। यद्यपि इन अध्यायों की विषय-वस्तु का वर्णन करने के कई तरीके हैं, परंतु हम देखेंगे कि जिस रूपरेखा का सुझाव हमने दिया है, वह मौटे तौर पर इन अध्यायों के मुख्य विषयों से मेल खाती है।

मुख्य विषय

कहने की जरूरत नहीं है कि पवित्रशास्त्र के किसी भी ऐसे भाग के मुख्य विषयों का वर्णन करना कठिन है जो अब्राहम के जीवन के समान ही लंबा और जटिल हो। इन अध्यायों में पाए जानेवाले प्रत्येक उद्देश्य या विषय का उल्लेख करना संभव नहीं है। परंतु ऐसे कई उद्देश्यों को ढूँढना संभव है जो अन्यों से अधिक महत्वपूर्ण हैं। और जैसा कि हम देखेंगे, इन अध्यायों के ये मुख्य विषय अब्राहम के जीवन की कहानियों को एक साथ बाँधते हैं, और उन मुख्य विचारों को समझने में हमारी सहायता करते हैं जिन्हें मूसा अपने मूल इस्राएली श्रोताओं से चाहता था कि वे अब्राहम के जीवन से सीखें। और इससे बढ़कर, इन मुख्य विषयों में हम यह भी देख सकते हैं, कि परमेश्वर पवित्रशास्त्र के इस भाग से हमें क्या सिखाना चाहता है।

हम अब्राहम के जीवन के मुख्य विषयों को दो तरीकों से देखेंगे : पहला, हम एक ऐसे मुख्य अनुच्छेद को जाँचेंगे जो अब्राहम के जीवन के चार मुख्य विषयों का परिचय देता है। और दूसरा, हम ऐसे तरीकों की खोज करेंगे जिनमें ये विषय अब्राहम के जीवन के अध्यायों में प्रकट होते हैं। आइए पहले उस मुख्य अनुच्छेद को देखें जो अब्राहम की कहनी के विषयों का परिचय देता है।

मुख्य अनुच्छेद

आपको निश्चित रूप से याद होगा कि अब्राहम के जीवन की कहानी के आरंभ के निकट हम उत्पत्ति 12:1-3 में अब्राहम के लिए परमेश्वर की बुलाहट को पाते हैं। जब अब्राहम मेसोपोटामिया के ऊर देश में ही रहता था, तो परमेश्वर ने अब्राहम को प्रतिज्ञा के देश को जाने के लिए बुलाया। अब कई वर्षों से, व्याख्याकारों ने स्वीकार किया है कि ये पद अब्राहम के जीवन की बड़ी कहानी में पाए जानेवाले कुछ अति महत्वपूर्ण उद्देश्यों को दर्शाते हैं। सुनिए इन पदों में मूसा ने क्या लिखा :

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> यहोवा ने अब्राम से कहा, "अपने देश, और अपने कुटुम्बियों, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा। और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊँगा, और तुझे आशीष दूँगा, और तेरा नाम महान् करूँगा, और तू आशीष का मूल होगा। जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूँगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूँगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएँगे" (उत्पत्ति 12:1-3)।

ये तीन पद महत्व से भरे हुए हैं और इन्हें कई भिन्न तरीकों से सारगर्भित किया जा सकता है। व्याकरण के स्तर पर, वे पद 1 के पहले भाग में एक परिचय के साथ आरंभ होते हैं। फिर वे अब्राहम के लिए परमेश्वर के वचनों के साथ जारी रहते हैं, जो दो भागों में विभाजित हैं। भाग एक, पद 1 के दूसरे हिस्से से लेकर पद 2 के अधिकांश भाग में एक आदेश पाया जाता है जिसके बाद तीन स्वतंत्र मौखिक अभिव्यक्तियाँ हैं। अब्राहम से परमेश्वर ने जो कहा उसका दूसरा भाग पद 2 के अंतिम भाग में और पद 3 में प्रकट होता है । दूसरा भाग व्याकरण के उसी प्रारूप का अनुसरण करता है जिसका पहले भाग ने किया था। इसका परिचय एक आदेश के द्वारा दिया जाता है जिसके बाद तीन स्वतंत्र मौखिक अभिव्यक्तियाँ आती हैं। उत्पत्ति 12:1-3 के इन तीन विभाजनों को देखने के द्वारा हम इस अनुच्छेद के महत्व के विषय में कुछ महत्वपूर्ण विचारों को प्राप्त कर सकते हैं।

परिचय

पहले पद 1 में उस सरल तरीके को सुनिए जिसमें मूसा अब्राहम के समक्ष परमेश्वर के वचनों को बताता है :

> यहोवा ने अब्राम से कहा था (उत्पत्ति 12:1)।

कई आधुनिक अनुवाद उचित रूप में ध्यान देते हैं कि इस वाक्य में क्रिया का अनुवाद "यहोवा ने कहा था" होना चाहिए न कि "यहोवा ने कहा।" यह अनुवाद इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि प्रेरितों के काम 7:2-4 में स्तिफनुस के उपदेश के अनुसार, अब्राहम ने अपनी बुलाहट हारान में अपने पिता तेरह के मरने से पहले ऊर में प्राप्त की थी। परंतु उत्पत्ति की साहित्यिक प्रस्तुति में हम पहले यह पाते हैं कि तेरह 11:32 में मर गया था और फिर हम उत्पत्ति 12:1 में पाते हैं कि परमेश्वर ने अब्राहम को बुलाया। इस कारण, उत्पत्ति 12:1 एक अतीत के दृश्य, अर्थात् समय के वापस जाने को दर्शाता है, और इसका अनुवाद "यहोवा ने कहा था" होना चाहिए। यह पद अब्राहम द्वारा परमेश्वर के प्रत्युत्तर में कुछ भी करना आरंभ करने से पहले के समय के बारे में बताता है, अर्थात् उससे बहुत पहले के समय को जब उसने प्रतिज्ञा के देश की ओर बढ़ना आरंभ किया था।

भाग एक

इस परिचय के बाद, हम अब्राहम के लिए कहे गए परमेश्वर के वचनों के पहले भाग पर आते हैं। यह पहला भाग आज्ञासूचक क्रिया के साथ आरंभ होता है जो एक आदेश को दर्शाता है। उत्पत्ति 12:1 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं :

> अपने देश, और अपने कुटुम्बियों, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा (उत्पत्ति 12:1)।

जैसा कि हम देख सकते हैं, यह खंड आदेश के साथ आरंभ होता है, "छोड़कर।" परमेश्वर ने अब्राहम को कुछ करने की आज्ञा दी थी : कनान देश को जाने की। यह पहली और मुख्य आज्ञा है जो परमेश्वर ने कुलपिता को दी।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्रतिज्ञा के देश को जाने की आज्ञा के बाद, अब्राहम के लिए परमेश्वर के वचनों का पहला भाग तीन खंडों में विभाजित होता है जिसे पद 2 के पहले भाग में तीन स्वतंत्र मौखिक अभिव्यक्तियों द्वारा दर्शाया गया है। उत्पत्ति 12:2 को फिर से देखें :

> **और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊँगा, और तुझे आशीष दूँगा, और तेरा नाम महान् करूँगा (उत्पत्ति 12:2)।**

ये वचन उन आशीषों पर ध्यान देते हैं जिन्हें परमेश्वर ने अब्राहम के समक्ष तब प्रस्तुत किए जब उसने उसे बुलाया। पहला, परमेश्वर ने कहा कि वह अब्राहम को एक बड़ी जाति बनाएगा। दूसरा, उसने अब्राहम को समृद्धि के साथ आशीषित करने की प्रतिज्ञा की। और तीसरा, उसने कहा कि वह अब्राहम और उसके वंश को एक बड़ा नाम, या प्रतिष्ठा प्रदान करेगा।

भाग दो

अब हम अब्राहम से कहे परमेश्वर के वचनों के दूसरे भाग की ओर आते हैं। यद्यपि अधिकांश आधुनिक अनुवाद हमें इसे देखने के योग्य नहीं बनाते, परंतु अब्राहम से कहे परमेश्वर के वचनों का दूसरा भाग, पहले भाग की व्याकरण संरचना जैसा ही है। यह आदेश के साथ आरंभ होता है और फिर उसके बाद तीन स्वतंत्र मौखिक अभिव्यक्तियाँ आती हैं। उत्पत्ति 12:2-3 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

> **और तू आशीष का मूल होगा। जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूँगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूँगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएँगे (उत्पत्ति 12:2-3)।**

जिस इब्रानी क्रिया का यहाँ अनुवाद किया गया है, "तू आशीष का मूल होगा," वह आदेश के रूप में है, और शायद पद 1 में "छोड़कर" की आज्ञा के समानांतर बनाने के लिए इसे ऐसा बनाया गया है। परंतु यह आदेश एक आज्ञा के रूप में कार्य नहीं करता। इसका अनुवाद कई रूपों में किया जा सकता है जैसे : "और तू एक आशीष होगा," या "और तुम एक आशीष ठहरो" या यह भी, "और तू निश्चित रूप से आशीष ठहरेगा।" सभी रूपों में, यह आदेश विचारों में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन को दिखाता है। यह अब्राहम द्वारा आशीष को प्राप्त करने से (जैसा कि हमने पद 2 के पहले भाग में देखा था) ध्यान को हटाता है और अब्राहम के दूसरों के लिए आशीष का स्रोत बनने पर ध्यान लगाता है।

इस दूसरे आज्ञासूचक रूप के बाद भी तीन स्वतंत्र मौखिक अभिव्यक्तियाँ आती हैं। ये तीन क्रियाएँ उस प्रक्रिया को दिखाती हैं जिसके द्वारा अब्राहम दूसरे लोगों के लिए आशीष बनेगा। पहला, परमेश्वर ने कहा, "जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूँगा. . ." इसका अर्थ है, परमेश्वर उन्हें भली वस्तुएँ देगा जो अब्राहम के साथ अच्छा व्यवहार करेंगे। जब लोगों ने अब्राहम के साथ अच्छा व्यवहार किया, तो परमेश्वर उनसे अच्छा व्यवहार करेगा। दूसरा, परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की, "जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूंगा..." इसका अर्थ है, परमेश्वर उन लोगों को शाप देगा जो अब्राहम का तिरस्कार करेंगे। परमेश्वर ने उन लोगों के साथ सख्ती से निपटने के द्वारा अब्राहम की रक्षा करने की प्रतिज्ञा की जिन्होंने स्वयं को अब्राहम का शत्रु बना लिया था। परंतु तीसरी बात में परमेश्वर ने यह कहा, "सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएँगे।" पहली दृष्टि में, तीसरा केंद्र अब्राहम के शत्रुओं को शाप देने का विरोधाभासी प्रतीत हो सकता है, परंतु परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा की कि अब्राहम के मित्रों को आशीष देने और उसके शत्रुओं को शाप देने की दोहरी प्रक्रिया के द्वारा परमेश्वर अपनी आशीषों को अंततः भूमण्डल के सारे कुलों तक पहुँचाएगा। अतः हम देखते हैं कि उत्पत्ति के 12वें अध्याय के आरंभिक भाग की व्याकरण तीन मुख्य भागों में विभाजित होती है : परिचय, उन आशीषों पर ध्यान जो परमेश्वर अब्राहम को देगा और उन आशीषों पर ध्यान जो परमेश्वर अब्राहम के द्वारा पूरे संसार को देगा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उत्पत्ति 12 के इन पदों की संरचना को समझना महत्वपूर्ण है क्योंकि कई रूपों में उत्पत्ति में अब्राहम की कहानियाँ दर्शाती हैं कि कैसे परमेश्वर द्वारा अब्राहम से की गई ये प्रतिज्ञाएँ उसके जीवन में पूरी हुई थीं। जब मूसा ने कुलपिता के बारे में लिखा, तो उसने अपनी कहानियों को ऐसे आकार दिया जिन्होंने उन वचनों की ओर ध्यान खींचा जो परमेश्वर ने अब्राहम को प्रतिज्ञा के देश को जाने के लिए बुलाते समय कहे थे।

व्याकरण की इस संरचना को ध्यान में रखते हुए, हम यह देखने के लिए तैयार हैं कि अब्राहम के जीवन के मुख्य विषय उत्पत्ति 12:1-3 से कैसे प्रकट होते हैं।

प्रकट होना

हम ध्यान देंगे कि ऐसे चार मुख्य विषय हैं जो इन पदों में पाए जाते हैं। हम अब्राहम के प्रति ईश्वरीय अनुग्रह के साथ आरंभ करेंगे। फिर हम परमेश्वर के प्रति अब्राहम की विश्वासयोग्यता की मांग, फिर अब्राहम के लिए परमेश्वर की आशीषों, और अंततः अब्राहम के द्वारा परमेश्वर की आशीषों के साथ जारी रखेंगे।

ईश्वरीय अनुग्रह

पहला उद्देश्य, जो अब्राहम के जीवन में कई बार पाया जाता है, यह है कि अब्राहम के साथ परमेश्वर का संबंध उसके अनुग्रह पर आधारित था। उत्पत्ति 12:1 के आरंभिक शब्दों में ईश्वरीय अनुग्रह अप्रत्यक्ष रीति से प्रकट होता है। जैसे कि हम देख चुके हैं, वहाँ हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> **यहोवा ने अब्राम से कहा था (उत्पत्ति 12:1)।**

इन सरल शब्दों ने मूसा के वास्तविक श्रोताओं को स्मरण दिलाया कि परमेश्वर के साथ अब्राहम का संबंध इसलिए था क्योंकि अब्राहम द्वारा परमेश्वर की सेवा में कोई कार्य करने से बहुत पहले ही परमेश्वर अब्राहम के जीवन में प्रवेश कर चुका था।

अब्राहम की बुलाहट उसके वयस्क जीवन में बहुत पहले आ गई थी। वह कनान देश के लिए अभी निकला नहीं था; उसने शत्रुओं पर अभी विजय नहीं पाई थी; वह वाचाई विश्वासयोग्यता के प्रति अभी समर्पित नहीं हुआ था; उसने अभी सदोम और अमोरा में धर्मी लोगों के लिए प्रार्थना नहीं की थी; वह विश्वास की किसी परीक्षा में अभी तक सफल नहीं हुआ था। इसके विपरीत, परमेश्वर ने अब्राहम को अपने विशेष सेवक के रूप में इसलिए बुलाया क्योंकि अब्राहम के प्रति अनुग्रहकारी होना परमेश्वर को अच्छा लगा।

अब निस्संदेह, परमेश्वर का अनुग्रह परमेश्वर के साथ अब्राहम के संबंध के केवल आरंभिक चरण में ही नहीं दिखा था। परमेश्वर का अनुग्रह वह विषय है जो अब्राहम की कहानियों में निरंतर पाया जाता है क्योंकि परमेश्वर ने कुलपिता के जीवन के हर क्षण में उस पर करुणा की। क्योंकि अब्राहम एक पापी मनुष्य था, इसलिए अब्राहम को हर समय परमेश्वर की दया की आवश्यकता थी। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 15:6 के जाने-पहचाने पद में हम सीखते हैं कि अब्राहम की उद्धाररूपी धार्मिकता भी दया का एक दान थी। वहाँ हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> **उसने यहोवा पर विश्वास किया; और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना (उत्पत्ति15:6)।**

जैसे कि प्रेरित पौलुस ने रोमियो 4:3 और गलातियों 3:6 में दर्शाया है कि परमेश्वर द्वारा अब्राहम को धर्मी गिने जाने की सच्चाई ने यह दर्शाया कि यह दया का एक कार्य था, न कि अच्छे कार्यों का कोई

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्रतिफल। और अब्राहम ने इसे और परमेश्वर से कई अन्य आशीषों को ईश्वरीय अनुग्रह और दया के द्वारा ही प्राप्त किया था।

मसीहियों के रूप में हम सब अपने जीवनों में परमेश्वर के अनुग्रह के महत्व को जानते हैं। हम जानते हैं कि परमेश्वर अपने अनुग्रह के द्वारा अपने साथ हमारे संबंध की शुरुआत करता है, और हम यह भी जानते हैं कि वह अपने अनुग्रह के द्वारा अपने साथ हमारे संबंध को बनाए रखता है। परमेश्वर की दया के बिना हम कहाँ होंगे? अब्राहम के साथ भी बिल्कुल ऐसा ही था। और इससे बढ़कर, परमेश्वर का अनुग्रह इस्राएलियों के लिए भी आवश्यक था जिनके लिए मूसा ने अब्राहम के बारे में लिखा था। उन्हें भी अपने समय में, दिन-प्रतिदिन, अपने जीवनों में परमेश्वर की दया की आवश्यकता थी। और इसी कारण, जब मूसा ने अब्राहम के जीवन के विषय में कहानियों को लिखा, तो उसने बार-बार उनका ध्यान परमेश्वर के अनुग्रह की ओर खींचा।

अब्राहम की विश्वासयोग्यता

परमेश्वर के अनुग्रह के विषय के अतिरिक्त, हमें यह भी देखना चाहिए कि उत्पत्ति 12:1-3 अब्राहम की विश्वासयोग्यता पर बल देता है। परमेश्वर ने अब्राहम को ऐसे ही अपनी दया प्राप्त करने के लिए नहीं चुना था; उसने कुलपिता पर इसलिए दया की ताकि अब्राहम विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता के साथ प्रत्युत्तर दे। जैसे कि हम देख चुके हैं, उत्पत्ति 12:1 की पहली आज्ञा परमेश्वर के प्रति एक विशेष रूप में प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य होने के अब्राहम के उत्तरदायित्व पर बल देती है। परमेश्वर ने उसे वहाँ यह आज्ञा दी :

> अपने देश, और अपने कुटुम्बियों, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा (उत्पत्ति 12:1)।

यह देखने के लिए अधिक सोचने की आवश्यकता नहीं है कि इस ईश्वरीय बुलाहट ने अब्राहम की ओर से बड़ी विश्वासयोग्यता की मांग की। उसे अपने देश और अपने पिता की संपत्ति को पीछे छोड़कर एक ऐसे स्थान को जाना था जो उसे अभी तक दिखाया नहीं गया था। हाँ, परमेश्वर ने अब्राहम पर दया की थी, परंतु अब्राहम से भी यह आशा की गई थी कि वह परमेश्वर के प्रति गहरी और विश्वासयोग्य सेवा को प्रकट करे।

दुखद रूप से, बहुत से मसीही अब्राहम को केवल परमेश्वर पर विश्वास और भरोसे के एक उदाहरण के रूप में ही मानते हैं। यह अब्राहम के जीवन का महत्वपूर्ण विषय है और इसे नए नियम के कई अनुच्छेदों में दर्शाया गया है। परंतु हमें इस तथ्य को कभी नजरअंदाज नहीं करना चाहिए कि परमेश्वर ने अब्राहम को आज्ञाकारी होने, और अपनी विश्वासयोग्य सेवा देने की आज्ञा दी थी। परमेश्वर ने कुलपिता से कई बार विश्वासयोग्यता की मांग की थी। उसे हर परिस्थिति में परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य होना था।

शायद उस समय का सबसे नाटकीय उदाहरण उत्पत्ति 22 में पाया जाता है जब अब्राहम को परमेश्वर के प्रति अपनी विश्वासयोग्यता दिखाने की आवश्यकता थी, एक ऐसा समय जब परमेश्वर ने अब्राहम को उसके पुत्र इसहाक को बलि चढ़ाने की आज्ञा दी, ताकि वह यह साबित करे कि वह अपने पुत्र से अधिक परमेश्वर से प्रेम करता है। परमेश्वर की ओर से इससे बड़ी मांग की कल्पना करना कठिन होगा।

यद्यपि अब्राहम को इसमें और अन्य कई रूपों में विश्वासयोग्यता को प्रकट करना था, फिर भी उत्पत्ति 12:1 अब्राहम के एक सबसे महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व को स्पष्ट करता है। वहाँ परमेश्वर ने यह कहा :

> उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा (उत्पत्ति 12:1)।

जैसे कि यह अनुच्छेद दिखाता है, अब्राहम को ऐसे देश को जाना था जो परमेश्वर उसे दिखाएगा। अब्राहम को प्रतिज्ञा के देश में निवास करना था, और यह विषय कुलपिता की कहानियों में कई बार पाया

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

जाता है। अब्राहम और उसके विश्वासयोग्य वंश के लिए परमेश्वर की बड़ी योजना में यह बहुत ही महत्वपूर्ण था कि कुलपिता प्रतिज्ञा के देश को जाए। और जब हम याद करते हैं कि मूसा ने अब्राहम के बारे में ये कहानियाँ उन इस्राएलियों के लिए लिखी थीं जिन्हें वह स्वयं प्रतिज्ञा के देश की ओर ले जा रहा था, तो इस बात पर दिए बल को देखना कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

मसीह के अनुयायियों के रूप में, हम समझते हैं कि यद्यपि उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह का एक मुफ्त दान है, फिर भी परमेश्वर हमसे अपेक्षा करता है कि हम उसकी आज्ञा को मानने का पूर्ण प्रयास करने के द्वारा उसके प्रति अपने आभार को प्रकट करें। मूसा भी इस सिद्धांत को समझ गया था। वह जानता था कि अब्राहम के प्रति परमेश्वर के अनुग्रह ने अब्राहम को परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बनाया था। और इस कारण, हम यह देखने जा रहे हैं कि जब हम अब्राहम के जीवन का अध्ययन करते हैं तो विश्वासयोग्यता की मांग कई बार प्रकट होती है। मूसा अपने मूल इस्राएली श्रोताओं के बारे में कुछ बातें जानता था। वे परमेश्वर के सामने विश्वासयोग्य जीवन जीने के महत्व को भूल जाने के आदी थे। यद्यपि परमेश्वर ने उन पर बहुत दया की थी जब उसने उन्हें मिस्र से छुड़ाया था और जंगल में जीवित रखा था, परंतु फिर भी वे परमेश्वर की आज्ञाओं से फिर गए थे। और इसी कारण, अब्राहम की कहानियों का एक मुख्य विषय परमेश्वर के प्रति अब्राहम की विश्वासयोग्यता था। यह विषय बार-बार पाया जाता है क्योंकि मूसा के मूल श्रोताओं को, और आज हमें भी, विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता में परमेश्वर की सेवा करने के लिए प्रोत्साहित होने की आवश्यकता है।

अब्राहम के लिए आशीषें

जैसा कि हम अब तक देख चुके हैं, परमेश्वर ने अब्राहम पर बहुत अनुग्रह किया, और उससे विश्वासयोग्य समर्पण की मांग की। उत्पत्ति 12:1-3 में हमें जिस तीसरे विषय पर ध्यान देना चाहिए, वह है अब्राहम को दी गई आशीषें। आपको याद होगा कि परमेश्वर ने उत्पत्ति 12:2 में कुलपिता से यह कहा था :

> **और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊँगा, और तुझे आशीष दूँगा, और तेरा नाम महान् करूँगा (उत्पत्ति 12:2)।**

परमेश्वर ने कुलपिता को तीन आशीषें दीं। पहली, परमेश्वर ने कहा कि अब्राहम एक बड़ी जाति बनेगा। उसकी संतानों की संख्या अनगिनत होगी। और उसके वंशज वास्तव में एक साम्राज्य, अर्थात् एक महान राष्ट्र बनेंगे। उस समय अब्राहम और जो लोग उसके साथ थे वे संख्या में अपेक्षाकृत बहुत कम थे। और अब्राहम की अपनी कोई संतान नहीं थी। फिर भी, परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि एक दिन अब्राहम के वंशजों की संख्या आकाश के तारों से भी अधिक होगी।

दूसरी, परमेश्वर ने अब्राहम से कहा कि वह उसे आशीष देगा। पूरी संभावना के साथ इस वाक्य का अर्थ है कि अब्राहम और उसके वंशजों को बहुत बड़ी समृद्धि की आशीष प्राप्त होगी। अब्राहम और उसके वंशज भरपूरी और संपन्नता में जीवन व्यतीत करेंगे। वे न तो पृथ्वी पर भटकेंगे, न ही वे केवल बसने वाले होंगे। जब अब्राहम और उसके वंशज विश्वासयोग्य प्रमाणित होंगे, तो वे महान समृद्धि का आनंद लेंगे।

तीसरी, परमेश्वर के आशीष के प्रस्ताव में अब्राहम को एक बड़ा नाम प्रदान करना भी शामिल था। दूसरे शब्दों में, यदि अब्राहम प्रतिज्ञा के देश को जाता है और विश्वासयोग्यता के साथ परमेश्वर की सेवा करता है, तो उसके वंशजों की अनगिनत संख्या और समृद्धि उसे और उन्हें पूरे संसार में आदर के योग्य बनाएगी। कुलपिता और उसके विश्वासयोग्य वंशजों पर बड़ी महिमा उतर आएगी।

वास्तव में, अब्राहम की सारी कहानियों में मूसा ने बार-बार यह दर्शाया कि अब्राहम पर इस प्रकार की आशीषें उंडेली गई थीं। अब्राहम के पुत्र हुए; जब वह एक अनुभव से दूसरे की ओर बढ़ा तो उसने बड़ी संपत्ति को प्राप्त किया। वह उस क्षेत्र में एक जानी-मानी हस्ती बना। जिन इस्राएलियों ने इन कहानियों

को सुना, अब्राहम की आशीषें उनकी भावी आशीषों के लिए भी बड़ी आशा को लेकर आईं। कुलपिता को दिए गए वंशजों, समृद्धि और नाम के दान उन बड़ी आशीषों के पूर्वाभास ही थे जो परमेश्वर अब्राहम के विश्वासयोग्य वंशजों को देगा।

मसीहियों के रूप में, हमने परमेश्वर से इतनी आशीषों को प्राप्त किया है कि हम उन्हें गिन भी नहीं सकते। और निस्संदेह, जिन इस्राएलियों ने प्रतिज्ञा के देश की ओर जाने में मूसा का अनुसरण किया था, उन्होंने भी परमेश्वर से अनगिनत आशीषों को प्राप्त किया। उन्हें गुलामी से छुड़ाया गया था; वे संख्या में बहुत बढ़ गए थे; उनकी पूरी यात्रा के दौरान उन्हें सुरक्षित और बचाए रखा गया था और वे प्रतिज्ञा के देश की ओर बढ़ रहे थे, जो कि भविष्य का एक बड़ी आशीषों का देश था। परंतु इस्राएली हमारे समान थे, परमेश्वर ने जो कुछ उनके लिए किया था और जो कुछ उनके लिए रखा था उसे भूलने के आदी थे। इसलिए मूसा ने अपने इस्राएली श्रोताओं को उनके जीवनों में परमेश्वर द्वारा दी गई आशीषों की याद दिलाने के लिए उन आशीषों के बारे में लिखा जो परमेश्वर ने अब्राहम को दी थीं ताकि उनके हृदय आभार से भर जाएँ।

अब्राहम के द्वारा आशीषें

परमेश्वर की दया, अब्राहम की विश्वासयोग्यता, और अब्राहम के लिए परमेश्वर की आशीषों के अतिरिक्त, उत्पत्ति 12:1-3 इस बात की ओर भी ध्यान आकर्षित करता है कि दूसरे लोगों के लिए आशीषें अब्राहम के द्वारा आएँगी। याद करें कि उत्पत्ति 12:2-3 में परमेश्वर ने क्या कहा था :

> और तू आशीष का मूल होगा। जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूँगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूँगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएँगे (उत्पत्ति 12:2-3)।

इन वचनों ने स्पष्ट किया कि अब्राहम न केवल आशीषों को प्राप्त करेगा बल्कि पृथ्वी के सभी लोग उसके द्वारा आशीष पाएँगे। परमेश्वर ने अब्राहम को प्रतिज्ञा के देश में केवल इसलिए नहीं बुलाया कि वह उसके जीवन को और उसके वंशजों के जीवनों को समृद्ध बनाए। परमेश्वर ने अब्राहम को पृथ्वी की सभी जातियों के लिए ईश्वरीय आशीषों का स्रोत बनने के लिए बुलाया था। अब यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यह अनुच्छेद सिखाता है कि अब्राहम की विश्वव्यापी आशीष दो तरीकों से आएगी। उत्पत्ति 12:3 में परमेश्वर ने कहा :

> जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूँगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूँगा (उत्पत्ति 12:3)।

इस अनुच्छेद के अनुसार, अब्राहम मनुष्यजाति के बीच एक दोधारी तलवार के समान कार्य करेगा। क्योंकि अब्राहम को परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त था, इसलिए जब दूसरे राष्ट्रों के लोग अब्राहम को आशीष देंगे, अर्थात्, जब वे उसका आदर करेंगे और इस प्रकार उस परमेश्वर का आदर करेंगे जिसकी वह सेवा करता है, तो परमेश्वर उन्हें आशीष देगा। परंतु जब दूसरे राष्ट्रों के लोग अब्राहम को शाप देंगे या उस पर आक्रमण करेंगे और इस प्रकार अब्राहम के परमेश्वर को तुच्छ जानेंगे, तो परमेश्वर उन्हें दंड देगा। दूसरे लोगों का भविष्य इस बात पर निर्भर था कि वे अब्राहम के साथ कैसा व्यवहार करते हैं।

अपने जीवनकाल में अब्राहम का ऐसे कई लोगों से आमना-सामना हुआ जो दूसरे राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व करते थे, जैसे कि पलिश्ती, कनानी, मिस्री, और उसका भतीजा लूत जो मोआबियों और अम्मोनियों का पूर्वज था। ये परस्पर संपर्क महत्वपूर्ण थे क्योंकि इन्होने उन विशिष्ट तरीकों को दर्शाया जिनमें परमेश्वर ने दूसरे लोगों को इस बात पर आधारित होकर आशीष या शाप दिया कि उन्होंने अब्राहम

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

के साथ कैसा व्यवहार किया था। उन्होंने यह भी दर्शाया कि अपने जीवनकाल में ही अब्राहम जगत के लिए आशीष बनना शुरू हो गया था।

परमेश्वर के लोगों के लिए अक्सर इस महत्वपूर्ण शिक्षा को भूल जाना आसान होता है। मूसा के समय में इस्राएली आज के कई मसीहियों के समान थे। हम परमेश्वर से उद्धार की आशीष और परमेश्वर से जीवन का आनंद उठाते हैं, परंतु हम भूल जाते हैं कि ये आशीषें हममें से प्रत्येक को क्यों दी गई हैं। मूसा की अगुवाई में परमेश्वर ने इस्राएल को जो प्रत्येक आशीष दी और आज कलीसिया को जो प्रत्येक आशीष वह देता है, उसकी रचना एक बड़े उद्देश्य के साथ की गई है। हमें आशीषित किया गया है ताकि हम पूरे जगत में परमेश्वर की आशीषों को फैला दें। परमेश्वर ने अब्राहम को अपने पास बुलाया ताकि अब्राहम जाति-जाति के लोगों को परमेश्वर की आशीषों की ओर ले जाए। मूसा के समय में परमेश्वर ने इस्राएल को अपने पास बुलाया ताकि वे जाति-जाति के लोगों को परमेश्वर की आशीषों की ओर ले जाएँ। और आज परमेश्वर ने कलीसिया को अपने पास बुलाया है ताकि हम जाति-जाति के लोगों को परमेश्वर की आशीषों की ओर ले जाएँ। यह विषय उन इस्राएलियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण था जिन्होंने अब्राहम की कहानियों को सबसे पहले प्राप्त किया था। और यह हमारे लिए भी महत्वपूर्ण है जब हम अपने समय में मसीह का अनुसरण करते हैं।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने अब्राहम के जीवन के अवलोकन पर पहली दृष्टि डाली है। और हमने अपना ध्यान उत्पत्ति के इस भाग की संरचना, या रूपरेखा पर केंद्रित किया है। और साथ में हमने उन मुख्य विषयों, या विषय-वस्तु की भी जाँच की है जिन्हें मूसा ने इस साहित्यिक संरचना के संदर्भ में अब्राहम के जीवन में प्रस्तुत किया है।

जैसे-जैसे हम इन अध्यायों में आगे बढ़ते हैं, तो हम इस अध्याय के विषयों पर बार-बार लौटेंगे। हमने देखा है कि अब्राहम के जीवन की कहानी में पाँच चरणों की समरूपता है। और हम यह भी देख चुके हैं कि अब्राहम के जीवन में चार मुख्य विषय हैं : अब्राहम के प्रति परमेश्वर की कृपा, अब्राहम की विश्वासयोग्यता, अब्राहम के लिए परमेश्वर की आशीषें, और अब्राहम के द्वारा परमेश्वर की आशीषें। ये विषय हमें न केवल अब्राहम के जीवन की कहानी में ऐसे विचार प्रदान करते हैं कि प्राचीन समय में जब यह पहली बार इस्राएलियों के लिए लिखी गई थी तो इसके क्या अर्थ थे, बल्कि ये इस बात को भी संभव बनाते हैं कि हम पवित्रशास्त्र के इस भाग को आज अपने जीवनों में लागू करें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।